अपनी अद्भुत कल्पनाशीलता व विस्तृत अनुभव का प्रयोग कर बेजान मिट्टी से जीवंत कलाकृतियां बनाना कल्पना अमीन के जीवन का ध्येय बन चुका है. उन की बनाई कलाकृतियों में अफ्रीका की जनजातियों से ले कर भारतीय देवीदेवताओं का समावेश उन की कलात्मक सोच का वृहद फलक दर्शाता है.

माटी कला की कुशल शिल्पी : कल्पना अमीन

कला एक सीमाहीन निरंतर बहती धारा है. तमाम झंझटों में उलझा मानव कला की धारा स्पर्श कर ले तो वह तरंगित हो उठता है. चेहरा एक अलौकिक उजास से भर उठता है.

कला की स्निग्ध धारा इस इमारत में रखी मूर्तियों में बह रही है. बात वल्लभ विद्यानगर (गुजरात) में स्थित 'फ्लो आर्ट' गैलरी की हो रही है. इस के मुख्य द्वार पर जड़े म्यूरल में गेट से अंदर घुसते ही 'फ्लो आर्ट' लिखे व म्यूरल व मूर्तियों से सजे परिसर की सामने की दीवार व बाहर की दीवार ऐसा आभास कराती है जैसे आप पहाड़ी नदी पर बांस के पुल से किसी झोंपड़ी में जा रहे हों.

अंदर अर्द्धचंद्राकार दरवाजों वाली इस छोटी सी गैलरी में जा कर हैरानी होती है. यहां बिछा लाल कालीन आप का स्वागत करता है.

इस सुरुचिपूर्ण कलात्मक दुनिया में सब कुछ है. जनजातियों की नीग्रो मूर्तियां, उन के मास्क, हाथी, घोड़े व अन्य जानवर, हिंदुस्तानी देवीदेवता, गांव की चौपाल, हुक्का पीते बुजुर्ग, गरदन में रिंग पहने अफ्रीकी जिन की मान्यता है कि गले में रिंग पहनने से गरदन लंबी हो जाती है. इन के अलावा मिस्र के सुप्रसिद्ध रहस्यमय राजा तूतनखामन का चेहरा, वाद्य बजाते अफ्रीकी आदिवासी. कोई मूर्ति एक जैसी नहीं है. हां, सभी में बस एक बात समान है कि ये आकृतियां अपनी संपूर्णता लिए अपने सौंदर्य के चरम पर हैं. इन के चेहरों के हावभाव मानव अनुभूतियों से ओतप्रोत हैं.

ऐसे ही आंतरिक सौंदर्य से सराबोर है इस आर्ट गैलरी की स्वामिनी कल्पना अमीन का व्यक्तित्व, जिन की आंखों व होंठों की मुसकान में अपनी कलात्मकता का सौंदर्यबोध बिखरा हुआ है.

कल्पना अमीन का कहना है, "मेरा विश्वास है कि कलात्मक कार्यों के मूल्य हमारे आसपास के जीवन में बिखरे होते हैं. एक कलाकार उन की गुणवत्ता को अपने सामर्थ्य के अनुसार अभिव्यक्त करता है. मैं यह मानती हूं कि प्रत्येक हृदय को सौंदर्यबोध स्पर्श करता है लेकिन कुछ मस्तिष्क ही यह सोचते हैं कि ऐसा क्यों होता है."

अफ्रीका के गांवों में घूमघूम कर व अन्य कई देशों की यात्राएं कर के लोगों की कलात्मक अभिरुचि के बारे में अमीन ने नोट्स बनाए हैं, जोकि जंगली प्रजातियों, मोटे होंठ व शरीर पर चटकीले निशानों में सौंदर्य खोजते हैं.

पुश्तैनी धरोहर

मूर्तिकला के लिए समर्पित कल्पना अमीन को 'फ्लो आर्ट' की मुख्य इमारत के पीछे बने अपने स्टूडियो में अपने कारीगरों को निर्देश देते तो कभी स्केच से कुछ समझाते हुए देखा जा सकता है. वह बताती हैं, "मेरी 3 पीढ़ियां कीनिया में रह रही थीं. 1972 में मेरे दादाजी ने मुझे शिक्षा के लिए भारत भेजा ताकि मैं यहां के रीतिरिवाज समझ सकूं. मेरे लिए तब भारत एक विदेश ही था. इस बीच मेरी मुलाकात शरद अमीन से हुई. जब उन्होंने शादी का प्रस्ताव रखा तो मैं ने कहा कि शादी के बाद हम लोग अमेरिका में बस जाएंगे.

कल्पना अमीन

"पति शरद अमीन ने समझाया कि यह ठीक है कि अमेरिका में रह कर हम खूब पैसा कमाएंगे पर उस पैसे का सुख हम और हमारे बच्चे ही भोगेंगे जबकि मैं चाहता हूं कि हम भारत में रहें और मैं एक फैक्टरी खोलूं. तुम भी अपनी कला को विकसित करना ताकि हम लोग अन्य लोगों को भी रोजगार दे सकें और हमारा जीवन औरों के भी काम आ सके."

सब से पहले उन्होंने एक ब्यूटीपार्लर खोला. तब लोगों में चर्चा होने लगी कि अमीन घर की बहू ऐसा काम कर रही है. इस पर सास ने समझाया कि तुम किसी की परवाह न करो. बस, अपना काम मन लगा कर करो.

उन के घर में कदम रखते ही यह एहसास होता है कि यह किसी कलाकार का घर है. उन की बेटी पेंटिंग दिखाती है जिस में 2 बिल्लियों ने दूध के बरतन को उलट दिया है व दूध पी रही हैं. वह बताती है कि जब हम लोग दूध नहीं पीते थे तो मम्मी ने यह पेंटिंग बनाई थी. वह कहती थीं कि जल्दीजल्दी दूध पी लो नहीं तो बिल्ली दूध पी जाएगी. हम ने इस पेंटिंग को देख कर ही दूध पीना सीखा.

मेहमानों की आवभगत, स्टूडियो की देखभाल व घर के कामों से निबट कर अमीन कल्पनाओं की तलाश में बैठ जाती हैं.

क्या कभी ऐसा हुआ है कि आप ने होटल, घर या किसी फैक्टरी को सजाया हो तो वहां के लोगों को आप का काम पसंद नहीं आया हो? प्रश्न के जवाब में कल्पना कहती हैं, "ऐसा साल में 1-2 बार होता है. लोग मेरी बनाई चीज में अपनी पसंद का बदलाव चाहते हैं."

कुछ लोगों को रोजगार देने का कल्पना अमीन का सपना पूरा हो चुका है. उन के स्टूडियो में 15-16 लोग काम करते देखे जा सकते हैं. पहले जो कुम्हार हुक्के व छोटेछोटे खिलौने बना कर इधरउधर बेचा करते थे, वे अब कलात्मक काम में संलग्न हैं. इन में सब से वरिष्ठ हैं सामंत भाई. वह बताते हैं, "मैं 6 साल से यहां काम कर रहा हूं. मैं पहले मिट्टी के घोड़े व हाथी बनाता था. कल्पनाजी ने जब मेरी कला देखी तो उन्होंने यहां काम दिया."

यहां के मैनेजर उत्पल एम. पारिख बताते हैं, "मिट्टी की ये आकृतियां जब सूख जाती हैं तो इन्हें इस विशाल भट्ठी में 24 घंटे पकाया जाता है. महीने में 1 बार यह भट्ठी गरम की जाती है."

कभी कुछ मूर्तियां टूट भी जाती होंगी? पूछने पर पारिख ने बताया, "हां, कुछ चटक जाती हैं और बेकार हो जाती हैं. कुछ मूर्तियों की मरम्मत कर दी जाती है. कभी कोई बड़ा आर्डर आता है तो सांचा बना लेते हैं. बाद में इन्हें विशेष प्रकार के रंगों से रंगा जाता है.

इन मूर्तियों को बनाने के लिए पास के तालाब की मिट्टी में 2-3 तरह की मिट्टियां मिलाई जाती हैं. इन्हें एक्सपोर्ट भी किया जाता है. दीवारों पर टांगने वाले म्यूरल्स में जड़े होते हैं जैसे सूर्य, गणेश, हाथी, ऊंट इत्यादि. ये म्यूरल्स 100 मिलीमीटर से कई मीटर तक के हो सकते हैं.

आप के भविष्य का क्या सपना है? पूछने पर कल्पना अमीन बताती हैं, "फ्लो आर्ट की यह जगह मेरे लिए कम पड़ने लगी है. अब मैं अपनी 10 एकड़ जमीन में बड़ी आर्ट गैलरी बनाना चाहती हूं जहां पर गुजरात के सभी छोटेछोटे कारीगर रह कर अपना काम आराम से कर सकेंगे. वहां आश्रम जैसा वातावरण रहेगा." -नीलम कुलश्रेष्ठ ●

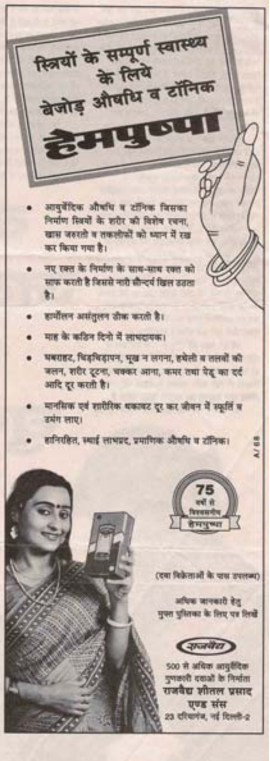

स्त्रियों के सम्पूर्ण स्वास्थ्य
के लिये
बेजोड़ औषधि व टॉनिक
हेमपुष्पा

- आयुर्वेदिक औषधि व टॉनिक जिसका निर्माण स्त्रियों के शरीर की विशेष रचना, खास जरूरतों व तकलीफों को ध्यान में रख कर किया गया है।
- नए रक्त के निर्माण के साथ-साथ रक्त को साफ करती है जिससे नारी सौन्दर्य खिल उठता है।
- हार्मोनल असंतुलन ठीक करती है।
- माह के कठिन दिनों में लाभदायक।
- घबराहट, चिड़चिड़ापन, भूख न लगना, हथेली व तलवों की जलन, शरीर टूटना, चक्कर आना, कमर तथा पेडू का दर्द आदि दूर करती है।
- मानसिक एवं शारीरिक थकावट दूर कर जीवन में स्फूर्ति व उमंग लाए।
- हानिरहित, स्थाई लाभप्रद, प्रमाणिक औषधि व टॉनिक।

A/68

75 वर्षों से विश्वसनीय हेमपुष्पा

(दवा विक्रेताओं के पास उपलब्ध)

अधिक जानकारी हेतु
मुफ्त पुस्तिका के लिए पत्र लिखें

राजवैद्य

500 से अधिक आयुर्वेदिक
गुणकारी दवाओं के निर्माता
राजवैद्य शीतल प्रसाद
एण्ड संस
23 दरियागंज, नई दिल्ली-2